सामाजिक सन्दर्भ में आलोचनात्मक भाषा चेतना

डा० तारकेश्वर गुप्ता

सहायक प्रोफेसर, महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदोई, (उ० प्र०)

सारांश

"भाषा के कारण ही मनुष्य मनुष्य है, पर भाषा के आविष्कार के लिए उसका पहले से ही मनुष्य होना आवश्यक है।" - वान हम्बोल्ट

आलोचनात्मक भाषा चेतना भाषा, भाषाई विविधता और व्यवहारगत सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक पहलू को समझना है। यह अध्यापक की सहायता के लिए एक उपकरण के रूप में है। जिससे शिक्षक और विद्यार्थी शिक्षण और अधिगम की प्रकृति की गहराई तक सूझ उत्पन्न कर सकते हैं। यह भाषा से सम्बन्धित मुद्दों और शिक्षण-अधिगम के दृष्टिकोण के प्रति एक वैचारिक झुकाव के साथ भाषा का ज्ञान भी है। मनुष्य की सामाजिकता में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है। विचारों को समझाना, उसका विश्लेषण करना तथा अभिव्यक्त करना इसके मुख्य पक्ष हैं। भाषा के अभाव में समयगत विकास और समकालीन दृष्टिकोण का विस्तार कठिन हो जाता है। समाज को समझना तथा सामाजिक क्रिया-कलापों को सम्पादित उचित तरीके से सम्पन्न करना आवश्यक हैं। भाषा आदि से अन्त तक समाज से सम्बन्धित है। उसका विकास समाज में होता है, इसलिए यह एक सामाजिक संस्था है। यों, अकेले में, हम भाषा के सहारे सोचते अवश्य हैं, किन्तु वह भाषा इस सामान्य मुखर भाषा से भिन्न है जिसकी बात की जा रही है। भाषा एक सामाजिक क्रिया है उसके द्वारा हमारे सामाजिक व्यवहार सम्पन्न होते हैं। मनुष्य के समस्त कार्य, व्यापार, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक सम्बन्ध भाषा पर निर्भर है। व्यक्ति की मानसिक वृद्धि और विकास में भाषा का विकास भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। शब्दकोश में वृद्धि में और बोलना सीखने के साथ-साथ वाक्य निर्माण और भावों की अभिव्यक्ति करने के ढ॰ ंग में भी पर्याप्त कुशलता आने लगती है।

कुंजी शब्द- आलोचनात्मक भाषा चेतना, समकालीन दृष्टिकोण, आविष्कार, शब्दकोश

प्रस्तावना (Introduction)- भाषा केवल सम्प्रेषण का साधन ही नहीं है, बल्कि यह एक माध्यम भी है। जिसके सहारे हम अधिकांश जानकारी प्राप्त करते हैं। यह एक व्यवस्था है जो अधिक सीमा तक हमारे आस-पास की वास्तविकताओं और घटनाओं को हमारे मस्तिष्क में व्यवस्थित करती है। विभिन्न अध्ययनों से यह ज्ञात है कि बहुभाषिकता का संज्ञानात्मक विकास सामाजिक सहनशीलता, विकेन्द्रित चिन्तन एवं -शैक्षिक उपलब्धि से सकारात्मक सम्बन्ध होता है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से सभी भाषाएँ चाहे वे बोली, आदिवासी या खिचड.ी भाषाएॅ हों, सब समान रूप से वैज्ञानिक होती हैं। भाषाएँ एक दूसरे के सम्पर्क फलती-फूलती हैं साथ ही विशेष पहचान भी बनाकर रखती हैं।

आलोचनात्मकता का अभिप्राय है कि किसी विषय वस्तु या पाठ्य वस्तु को उसके लक्ष्य, गुण-दोषों एवं उपयुक्तता की विवेचना करना। इसमें पाठ्य सामग्री के साक्ष्य की जाॅच करना, साक्ष्य पर प्रभाव डालने वाले तत्वों का ज्ञान करना, पाठ में मौजूद व्याख्या की विवेचना करना जो कि साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है, वह और विचार एवं मत किस सीमा तक स्वीकृत हैं। जीवन सम्बन्धी कौशल जैसे- आलोचनात्मक चिन्तन का कौशल, अन्य लोगों के साथ सम्प्रेषण का कौशल, तोल-मोल करने/मना करने के कौशल, निर्णय लेने या समस्या सुलझाने के कौशल और परिस्थितियों का सामना करने का कौशल तथा स्वयं की व्यवस्था आदि के कौशलों का प्रतिदिन के जीवन की चुनौतियों और माँगों के सन्दर्भ में बहुत महत्व है। भाषा से विद्यार्थी दुनिया की मुख्य विशेषताओं से परिचित होकर इतिहास, सांस्कृतिक विरासत, राजनीतिक पक्ष, वैज्ञानिक और आधुनिक सूचना व तकनीकी से परिचित हो सकते हैं। साहित्य जो इंसान के लिए मनोरंजनात्मक, ज्ञानातमक, बोधात्मक व अनुभवी ज्ञान का विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध कराता है। विद्यार्थी उपन्यास, बाल कहानियाॅ, यात्रा वृतान्त, नाटक, कविताओं को पढ़ कर दुनिया में ज्ञान को प्राप्त करके सृजनात्मकता की ओर ध्यान लगाता है। विद्यार्थी जो

लेखन कार्य सीखकर अपने विचारों को लेखात्मक स्वरूप दे सकते हैं। भाषा सीखकर मानव समाज के लिए सृजनात्मक कार्य तथा चिन्तन करके शुभ कार्य की ओर अग्रसर होता है।

भाषा जागरूकता में सर्जनात्मक चिन्तन की प्रक्रिया काफी महत्वपूर्ण है। मानव मन किस प्रकार कार्य करता है इस पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया है कि नये और असाधारण विचारों के बारे में चिन्तन में तात्कालिक अन्तदर्ृष्टि के अतिरिक्त अन्य तत्व भी निहित हैं। इसके अन्तर्गत भाषा व्यवहार का मानसिक पक्ष महत्वपूर्ण होता है। भाषा के मानसिक पक्ष का तात्पर्य- भाषा व्यवहार करते समय श्रोता या पाठक के अर्थ ग्रहण की योग्यता तथा वक्ता या लेखक की अभिव्यक्ति की योग्यता से है। अर्थ ग्रहण सम्बन्धी योग्यताए सुनना तथा पढ़ना तीन स्तरों पर होती है, सूचनात्मक, आलोचनात्मक तथा सर्जनात्मक। सूचनात्मक स्तर पर केवल जानकारी प्राप्त की जाती है, जबकि आलोचनात्मक और सर्जनात्मक चिन्तन प्रधान हैं। बोलना तथा लिखना भी तीन स्तरों पर किये जाते हैं। प्रत्यास्मरणात्मक, रचनात्मक और सर्जनात्मक। प्रत्यास्मरणात्मक स्तर पर सुनी या पढ़ी हुई बात को केवल दुहराया जाता है। रचनात्मक स्तर पर 'रचना कार्य' कराया जाता है जबकि सर्जनात्मक स्तर पर अभिव्यक्ति में मौलिकता की अपेक्षा की जाती है।

भाषा की रचनात्मकता को स्पष्ट करते हुए डॉ॰ विश्वनाथ तिवारी कहते हैं कि- 'रचना की शक्ति सत्य की शक्ति होती है यही नैतिक शक्ति है। सबसे मजबूत। जो अकेले भी खड़ी हो सकती है और सत् और असत् के संघर्ष में मनुष्यता को राह दिखा सकती है। उसे सामयिक और चिरन्तन प्रश्नों से रू-ब-रू कर सकती है। जो कुछ भी मूल्यवान है और मनुष्य के भीतर सो रहा है उसे जगा सकती है।' वे कहते हैं- संवेदना से ही विचारधारा पैदा होती है मगर विचारधारा से संवेदना पैदा नहीं होती।

भाषा में जागरूकता लाने हेतु आलोचना साहित्य महत्वपूर्ण है। वर्तमान समाज बहुआयामी दृष्टिकोण रखने वाला हो गया है। आलोचना के

सन्दर्भ में डॉ० अशोक वाजपेयी का कहना है कि- 'सजग आलोचना वह है जो किसी भी समाज में व्याप्त वैचारिक एकरूपता का लगातार रचना के साक्ष्य से और अपनी निरन्तर विचारशीलता से परीक्षण करे और उसे विचलित करती रहे। उसका अध्यात्म शायद हमारे समय में इस समाज में यही है कि वह कविता के लिए कम होती जाती जगह को बचाये और बढ़ाने के लिए और उसकी स्वतंत्रता और स्वाभिमान को उसे मनुष्य की अन्तरात्मा के एक अक्षय साक्ष्य के रूप में सुरक्षित रखने का संघर्ष कभी भी शिथिल न होने दे- सारे शोरगुल के बीच कविता की आवाज दब न पाये और अलग और स्पष्ट सुनाई देती रहे। यही आलोचना की चेष्टा का अचूक लक्ष्य हो सकता है।'

'आज के मानव जीवन से तीन चीजें लुप्त हो रहीं हैं वो हैं पड़ोसी, अकेलापन और परिवेश। आज का व्यक्ति अपने पड़ोसी से कोई सम्बन्ध नहीं रखता। उसे कभी अकेलापन मुयस्सर नहीं होता क्योंकि वह यथार्थ से दूर वर्चुअल दुनिया में रहता है; या तो टीवी के सहारे या सेल फोन के सहारे•••• अपने को कोलाहल से जोड़े रखता है। परिवेश की विशेषता आज छुटी जा रही है क्योंकि प्रत्येक स्थान पर एक जैसी दूकानें, एक बेगानापन और एक जैसा माहौल तैयार हो रहा है। पहले हर स्थान की अपनी विशेषता होती थी और वहॉ का निवासी इस विशेषता पर गर्व किया करता था।'

आलोचनात्मक भाषा का प्रयोग बौद्धिक परिपक्वता का द्योतक है, किसी व्यक्ति या विषय-वस्तु के गुण-दोषों को स्पष्ट और निर्भिकता के साथ कहना आसान नहीं होता। व्यंग्यकार आसान शब्दों में अपनी बात को जनमानस तक पहुंचाता है। इस प्रकार के साहित्य को पढ़कर जनमानस जागरूक होता है तथा समाज में घटित होने घटनाओं से परिचित होकर एक दृढ़ मत बनाता है। आधुनिक समय विभिन्न प्रकार के संचार प्रणालियों का समय है तथा शिक्षण-अधिगम के विभिन्न स्रोत उपलब्ध हैं जिससे कम समय में अधिकाधिक पाठ्य सामग्री उपलब्ध हो जाती है जो सामान्य और विशिष्ट लोगों के लिए आवश्यक है। शैक्षिक, सामाजिक,

राजनैतिक, आर्थिक आदि समाज सम्बन्धित विषयों के प्रति रूचि रखना और जागरूक रखना विकासात्मक प्रक्रिया है।

निष्कर्ष- निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आलोचनात्मक भाषा की जागरूकता का समाज में महति आवश्यकता है। विद्यार्थियों में भाषा के प्रति अरूचि का भाव पैदा हो रहा है, जो सामाजिक दृष्टि से उचित नहीं है। रचनात्मकता का अभाव विकास में बाधक की भूमिका में है जिसे साधक की भूमिका में लाना आवश्यक है। बौद्धिकता के विकास में आलोचनात्मक भाषा की आवश्यकता होती है।

सन्दर्भ-

सिंह, आर० जे० (२००९), ''सर्जनात्मकता के संकेतक'' सर्जनात्मकता के लिए शिक्षा० संपा० सुषमा गुलाटी० नई दिल्लीः रा०शै०अ०प्र०प०, ४०-५१ प्रिन्ट०

मिश्र, आर० एन० (२०१३), "भारतीय साहित्य एवं सामासिक संस्कृति" प्रयास० संपा० सरन घई० कनाडाः विश्व हिन्दी संस्थान, ०७-१२.

रस्तोगी, जी० के० (१९९७),'' भाषा-संप्राप्ति निदान और उपचार'' नई दिल्लीः रा०शै०अ०प्र०प०, ६२-७१ प्रिन्ट०

https://www.teachenglishtoday.org/wp-content/uploads/2016/04/Critical-language-awareness-for-English-today.pdf

https://onlinelibrary.wiley.com/doi/abs/10.1002/9781118784235.eelt0660

https://corps.tamu.edu/why-study-critical-languages/

https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1081036.pdf